ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 174-175
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

रामायणकार ऋषि वाल्मीकि

प्रो. एस. ए. सूर्यनारायण वर्मा
अनुसंधान वैज्ञानिक सी, हिन्दी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम (आंध्र प्रदेश) भारत
Received- 11.12.2019, Revised- 14.12.2019, Accepted - 19.12.2019 E-mail: kakanikrishnaanu@gmail.com

सारांश : *'रामायण' प्रातः स्मरणीय रचना है। 'रामायण' धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत करने वाली, 'सत्य' के स्वरूप का आविष्कार करने वाली और जनमानस को अलौकिक अनुभूतियों से आप्लावित करनेवाली महान रचना है। 'रामायण' जैसे महत्तर एवं लोकोपकारी काव्य की रचना कर ऋषि वाल्मीकि ने मानव जाति का पथ–प्रदर्शन किया है। अयोध्या के महाराज दशरथ के पुत्र तथा भगवान विष्णु के सातवें अवतार 'राम' की कथा जिस ग्रंथ में वर्णित है, वही 'रामायण' कहलाता है। 'रामायण' का अर्थ है राम का चरित्र तथा 'सीतान्वेषणार्थ राम का आयन या यात्रा'। रामायण के आदिकर्ता के रूप में ब्रह्मा का नाम लिया जाता है, लेकिन उसे संसार में प्रचलित करने का श्रेय आदि कवि वाल्मीकि को प्राप्त है। वाल्मीकि की रामायण संस्कृत का आदि काव्य है, जो 24000 श्लोकों में है। यह सात काण्डों में विभक्त है– बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। वाल्मीकि के आदिकाण्ड का प्रभाव भारतीय एवं विदेशी वान्ङ्मय पर पड़ा है। वाल्मीकि ने पुरुषोत्तम राम को दृढ़ प्रतिज्ञावान, सत्यशील–सम्पन्न, धर्मस्वरूप एवं चरित्रवान के रूप में चित्रित किया है कि वे अपने पुरुषोत्तम गुणों के कारण देवत्व की कोटी में पहुँच कर आराध्य देव बन गए हैं ।*

कुंजी शब्द – स्मरणीय, अविष्कार, जनमानस, अलौकिक, अनुभूतियों, आप्लावित, लोकोपकारी, पथ–प्रदर्शन।

संस्कृत में वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त अध्यात्म रामायण, बाल रामायण, गायत्री रामायण, अद्‌भुत रामायण, महा रामायण, योगवशिष्ठ रामायण, तत्व संग्रह रामायण, अब्द रामायण आदि भी उल्लेखनीय हैं। भारतीय भाषाओं में भी रामायण की एक सुदीर्घ परंपरा रही। हिन्दी में रामचरितमानस, बंगला में कृतिवास रामायण, मराठी में श्रीराम विजय, असामिया में माधव कंदली रामायण, ओडिया में उपेन्द्रभुंज कृत वैदेहीश विलास, नेपाली में भानुभक्त रामायण, गुजराती में गिरधर रामायण, तेलुगु में रंगनाथ रामायण, कन्नड में पंप रामायण, तमिल में कंब रामायण, एषुत्तच्छन कृत अध्यात्म रामायण विशेष ख्याति प्राप्त ग्रंथ हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की है। रामचरितमानस ने लोगों में भक्ति भावना जागृत की है। मूल्यों की कसौटी पर मानव जीवन की श्रेष्टता में आस्था जगाने में भी मानस की सफलता असंदिग्ध सिद्ध हुई है। मुगल शासकों के हिन्दू धर्म पर अत्याचारों और दुराक्रमण होने के संदर्भ में भारतवासियों की, हिन्दू धर्म में आस्था को अडिग बनाए रखने और इस देश की संस्कृति को सुरक्षा देने में रामचरितमानस की भूमिका निर्णायक सिद्ध हुई है।

संस्कृत के आदिकवि और विश्वविख्यात धार्मिक ग्रंथ 'रामायण' के रचियिता वाल्मीकि जन्म से ब्राहमण थे। इन्हें ब्रह्मा के पुत्र माना जाता है। अपने बाल्य काल से ही माता–पिता के परित्यक्त होने के कारण ये डाकुओं और लुटेरों की संगति में फँस गये। सहज ही इनके आचरण में भी परिवर्तन आया। एक बार सप्तर्षियों को रास्ते पर घेर लिया तथा उन्हें लूटने लगे। उन्होंने समझाया कि वे घर जाकर पत्नी तथा बच्चों से यह पूछ कर आए कि उन्हें पालने के लिए ये जो पापाचरण करते जा रहे हैं, उनका फल वे भी भोगने को तैयार हैं या नहीं। वाल्मीकि ने पत्नी तथा संतान से पूछा तो उनका उत्तर था कि जो पापाचरण करता है, वही फल का भोक्ता भी होता है। यह सुनकर वाल्मीकि के मन में वैराग्य जाग उठा। सप्तर्षियों ने इनसे अपने लौट आने तक वहीं बैठकर 'मरा मरा' जपने का उपदेश दिया। ये ऐसा ही करते गये। तेरह वर्षोपरांत जब सप्तर्षि लौटे, तब तक ये वल्मीक से ढँक गये थे। वल्मीक से इन्हें बाहर निकाल गया। इनका नाम वाल्मीक पड़ा। ये बड़े तपस्वी हुए। सप्तर्षियों के जाने पर इन्होंने सुशस्थली पहुँच कर शिवोपासना से कवित्व–शक्ति प्राप्त की। फिर तांसा नदी के तट पर आश्रम बनाकर रहने लगे। एक बार दो क्रौंच मिथुनों में से एक का, एक निषाद द्वारा वध करने पर इनके मुँह से शाप की वाणी निकली–मा निषाद प्रतिष्ठांत्वमगम शास्वती समाहाः यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् (हे नीच व्याध–तू काममोहित क्रोंचमिथुनों में से एक को मार डालने के कारण अधिक समय जीवित नहीं रह पायेगा) रामायण के प्रसंग में इसका अर्थ है– हे लक्ष्मी के लिए आश्रयभूत ! आपने जिस कारण राक्षस–मिथुनों में काम से मोहित एक को मार डाला, इसीलिए शाश्वत ख्याति प्राप्त की। इस संधर्भ में ब्रह्मा से 'रामायण' की रचना का आदेश पाकर इन्होंने 'रामायण' के रचना की।

जीवन की सबसे श्रेष्ठ कला 'तपस्या' है।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

'तपस्या' धर्म का पहला और आखरी कदम है। यह 'तपस्या' जितनी सार्थक होती है, उसकी आत्मा तपाए हुए सोने के समान निर्मल, निष्कलुष और उज्ज्वल हो जाती है। अपनी पीडा को सह लेना, दूसरों के जीवन को पीडा न पहुँचाना और अपने लक्ष्य की प्राप्ति तक कार्योन्मुख रहना, यही तपस्या है। अहम्, हिंसा, देह और संपत्ति के प्रति मोह, कुटिलता और भव बंधनों को जलाकर राख बना देने वाली तपस्या पवित्र होती है। 'श्री राम' नाम का जाप करते हुए अपने पूर्व जन्मों में संचित किए हुए पाप को उस तपस्याग्नि में जला देना और परमात्मा के दिव्य चरणों में अपने सर्वस्व को अर्पित कर देना तपस्वी का कर्तव्य होता है। यह ज्ञात है कि क्रौंचमिथुनों में से एक को मार डालने के कारण विषादाग्नि में जलने के कारण वाल्मिकि बन गए 'महर्षि' द्वारा रामायण के सृजन के पीछे प्रेरणा – शक्ति के संबंध में कई कथाएँ प्रचलन में थी –

' वेद वेद्ये परे पुंसिजाते दशरधात्माजे !
वेदम प्राचेत सादासीत साक्षात रामायणात्मना । '

इस श्लोक में बताया गया है कि रामायण वेद–समान है और 'प्राचेतस' ने इसकी रचना की है। 'प्राचेतस' ऋषि वाल्मीकि का ही नाम है। प्राचेतगण की ऋषि परंपरा के वंशज थे वाल्मीकि। प्राचेतगण और उनके ऋषि पुत्रों का सामूहिक नाम भी प्रचेतस है। रामायणकार वाल्मीकि इसी परंपरा के हैं, विद्वानों की यही मान्यता है। स्कंद पुराण के अवंती खण्ड में लिखा गया है कि वाल्मीकि के बारे में सनत्कुमार ने महर्षि व्यास को बताया है – 'वाल्मीकि वद्ब्रहमा बाग भुत्तस्या रुपिजि "अग्नि शर्मा के नाम से भी वाल्मीकि जाने जाते हैं ।

वाल्मीकि कृत रामायण एक महाकाव्य है। इसमें सभी शास्त्रों और धर्मों का सार निक्षिप्त हुआ है। "रामो विग्रहन् धर्मः "कहे या" जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपी गरीयसी "कहें–सभी शिखर समान दिखते हैं । शोधकर्ताओं की मान्यता है कि गायत्री मंत्राक्षरों से वाल्मीकि ने रामायण को मंत्रबद्ध किया है। इसी कारण 'रामायण' से महाकाव्य स्वयं एक 'महामंत्र' है। इस रचना में गेय तत्व भी पाये जाते हैं। कुश और लव के मुँह से रामायण को सुनकर ऋषियों ने यों कहकर प्रशंसा की–

" आहा गीतस्य माधुर्यम् श्लोकानाम् च विशेषतः
चिरनिर्वृत्त मष्चेतत् प्रत्यक्ष मिव दर्शितम् । "

'रामायण' परम योग का उज्ज्वल प्रतीक है। इस ग्रन्थ के छः खण्डों की तुलना में षट्चक्रों से करते हैं। कैकेई द्वारा वर माँगते समय 'मूलाधार' और 'चित्रकूट' पर्वों में सीता समेत वनवास करने पर स्वाधिष्ठान, अत्रि, अनसूया और अगस्त्य के आतिथ्य को स्वीकार करने के अवसर पर मणिपुर, कबंध वध के समय अनाहत, पम्पा के संदर्शन के समय और विशुद्धि और सुग्रीवाज्ञा के समय आज्ञाचक्रों का निरूपण किया जाता है। योगाचार्य मानते हैं कि सीता का संदर्शन सहस्रार– चक्र का निदर्शन है। 'रामायण' महाकाव्य में चिकित्साशास्त्र और औषधियों का भी महत्वपूर्ण समाचार मिलता है। युद्ध काण्ड में लक्ष्मण के बेहोश होने पर उसका उपचार करने के लिए विशल्यकरणी, सुवर्णकरणी, संजीवनी, संधानकरणी जैसी जडी बूटियों का विवरण सुषेन देता है। 'रामायण' मंत्र शास्त्र की निधि है। योग–संरक्षण हेतु विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण जाते हैं, तब बल और अतिबल विद्याओं तथा महत्तर अस्त्रों को संप्राप्त करने उन दोनों को विश्वामित्र मंत्रोपदेश देते हैं ।

'रामायण' एक नीति काव्य भी है। इसके सभी पात्र किसी न किसी नीति का संदेश देते हैं। रामायण में स्वप्न शास्त्र का भी प्रस्ताव है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी की ऐसा कोई शास्त्र नहीं है जिसका रामायणकार वाल्मीकि ने संस्पर्श न किया हो। धर्मासंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे। श्रीराम भगवान विष्णु के दशावतारों में सातवाँ अवतार, जो त्रेतायुग में हुआ था। राक्षसों का संहार करके संसार की रक्षा करना रामावतार का उद्देश्य था। श्री राम का चरित्र शीलगुण सौन्दर्य का साकार रूप था। उनका रामराज्य आदर्श राज्य था। वाल्मीकि ने रामायण की रचना की। सभी भारतीय भाषाओं में राम काव्य की समृद्ध परंपरा विकसित हुई। कई रचनाकारों ने श्री राम के चरित्र की विशिष्टता से, पद्य एवं गद्य रचनाओं के माध्यम से अवगत कराने का स्तुत्य प्रयास किया।

*****